

A Hindi Novellette by kathaapremee

Caution: lesbian, Gay, Older, Younger, oral, anal, incest, lactation, NC, watersport

Author's note: This is the last story I wrote and is one of my favorites as it has everything - Mother son incest in two pairs, cross pairing, group, lesbian and gay sex in all combinations etc. Please do not read if this is likely to upset you.

kthprm2004@yahoo.com

गांव में मस्ती-२

मरा मरा कर मेरी गांड बहुत दुख रही थी इसलिये मैं उस दिन स्कूल नहीं गया. मंजू भी बोली. "आज आराम करो मुन्ना. मैं क्रीम लगा देती हूँ तेरी गांड में. ठंडक पहुंचेगी. बेरहम रघू ने बहुत मारी है तेरी. पर वह भी क्या करे? है ही तू इतना प्यारा. वैसे अब मुझे जरा आराम मिलेगा क्योंकि वो गांड मारेगा तो सिर्फ तेरी. तेरी कमसिन गांड के आगे मेरी फुकला गांड उसे क्या अच्छी लगेगी? हां तेरी मां की जरूर मारेगा अब. कब का दीदी की मोटी ताजी गांड पर आंखें लगाये बैठा है मेरा लाल. लगता है आज ही तेरी मां ठीक हो जायेगी, अपने बेटे से चुदाने की जल्दी पड़ी होगी उस ममता की मूरत को. इसीलिये आज मैंने रघू भी दिन भर आराम करने को कहा है. रात को उसके लौड़े को फ़िर ओवरटाइम करना है!"

मैं दोपहर भर सोया. उठा तो रात होने को आयी थी. बाहर आया तो देखा कि मां भी नहा धोकर इधर उधर घूम रही थी. एकदम फ़ेश लग रही थी. मेरी आंखों में अचरज देखकर हंस कर बोली. "आ बेटे, मेरे पास आ. अरे मैं दो दिन में ही ठीक हो गयी. तू कैसा है? मंजू और रघू ने खयाल रखा ना तेरा?"

उसने मुझे सीने से लगा लिया और मेरा माथा चूम लिया. मां की भरी पूरी छाती में सिर छुपाकर मैं उससे चिपट गया. मां के बदन से बड़ी भीनी खुशबू आ रही थी. मेरा तुरंत खड़ा हो गया. मां ने मेरे लंड के दबाव को महसूस किया और मेरे गाल पर प्यार से चपत मार कर बोली. "शैतान कहीं का! अपनी मां पर नजर है तेरी अब? लगता है दो दिन में मंजू ने बहुत कुछ सिखा दिया."

मैंने ऊपर देखा. मां की आंखों में दुलार के साथ साथ एक बड़े तीखी चाहत थी. मेरे चेहरे पर की आस देखकर वह कुछ क्षण मुझे देखती रही और फ़िर झुककर मेरे होंठों पर अपने होंठ रखकर मेरा चुंबन लेने लगी. मैं उससे ऐसे चिपका जैसे कभी छूटना नहीं चाहता होऊँ और उसके होंठ चूसने लगा.

हमारा यह चुंबन शायद आगे और कुछ रूप धारण करता पर एकाएक मंजू आ गयी. मुझे जबरदस्ती अलग करते हुए खिलखिलाकर बोली. "चालू हो गये मां बेटे! कैसे छिनाल हो रे? चलो मालकिन, अलग हो. मां बेटे का प्यार ऐसे थोड़े चालू होने दूंगी! मुझे दक्षिणा देनी पड़ेगी."

मां थोड़ी लजाई और बोली. "ले ले मंजू बाई, कितनी चाहिये?"

मंजू नखरे दिखाती हुई बोली. "पैसे नहीं लूंगी. आज रात मैं और मेरा बेटा आप के और मुन्ना के साथ आपके कमरे में सोयेंगे. मजा करेंगे और मां बेटे का असली प्यार साथ साथ देखेंगे. दो जोड़ी मां बेटे एक साथ! तब आयेगा मजा."

मां शरमा कर बोली. "चल पगली, कुछ भी कहती है. हां मुन्ना को आज से मैं अपने साथ सुलाऊंगी! बेचारा अलग अकेला सोता है" और मेरी ओर देखकर मुस्कराने लगी. उसकी आंखों में अजब चाहत थी.

"आज से तो आप को असली प्यार मिलेगा बेटे का. और वह भी ऐसे खूबसूरत कमसिन बेटे का. भाग्यवान हो मालकिन. मुझे मालूम है कैसा लगता है. रघू तो और छोटा था जब से मेरे साथ सो रहा है. पर आज तो हम सब जरूर साथ में सोयेंगे. कल से फ़िर जैसा मौका मिले या आप का मन हो. मुन्ना गजब की चीज़ है बाई. रघू तो एक

रात में दीवाना हो गया है इसका." मंजू मेरे नितंबों पर हाथ फेरते हुए बोली.

मां ने मुझे पूछा "रघू ने कैसा प्यार किया तुझे बेटे? तकलीफ़ तो नहीं दी?" उसकी आंखों में चिंता के साथ साथ एक उत्तेजना भी थी.

मैं क्या कहता? रघू के लंड ने मेरी गांड को जैसा दुखाया था उसके कारण कहने वाला था कि मां बहुत दुखा, रघू ने तो मेरी गांड करीब करीब फ़ाड़ ही दी. पर यह भी याद आया कि क्या मजा आया था रघू से मरवा कर और उसका लंड चूस कर. रघू की गांड मार कर जो आनंद मिला था वह भी मेरे दिमाग में ताजा था. और रघू मुझे कितना प्यार करता था यह भी मैं जानता था.

मैं बोला. "बहुत मजा आया अम्मा, रघू और मंजू बाई ने मिलकर बहुत मस्त प्यार किया मुझे. थोड़ी बदन दुख रहा था और थक गया था इसलिये स्कूल नहीं गया आज . इन्हें भी सोने दो मां अपने साथ, मजा आयेगा."

मां आश्चर्य हर्ष पर उसकी आंखों में एक प्रशंसा की भावना थी. उसे मालूम था कि रघू ने मेरे साथ क्या किया होगा! सोच रही होगी कि उसके बित्ते भर के बच्चे ने आखिर कैसे रघू का लंड झेला होगा?

रात का खाना जल्दी खतम कर के हम सब मां के कमरे में आने की तैयारी करने लगे. रघू के कुरते में से बड़ा तंबू दिख रहा था. मां और मंजू उसे देख कर हंस रही थीं. दिन भर के आराम से रघू का लंड मस्ता गया था. उधर मां और मंजू भी बार बार एक दूसरे को चिपट लेती थीं. उनसे भी रहा नहीं जा रहा था. दो दिन के आराम से लगता है, मां भी एकदम गरमा गयी थी.

रघू मुझे गोदी में उठाकर चूमता हुआ मां के कमरे में लाया. अंदर आते ही उसने मेरे कपड़े उतारने शुरू कर दिये. उधर मंजू भी फ़टाफ़ट नंगी हो गयी. मेरे तने लंड को रघू ने चूमा और अपनी धोती कुरता उतारकर नंगा हो गया. उसका महाकाय लंड एकदम तन कर खड़ा था.

मां हम सब को देख रही थी. वह भी इतनी गरमा गयी थी कि पलंग पर बैठी बैठी अपनी जांघें रगड़ते हुए हमें देख रही थी. मेरे लंड को वह बड़ी भूखी नजरों से देख रही थी. मेरा लंड रघू के लंड का तिहाई होगा पर मेरी मां को अपने प्यारे बच्चे का लंड मिठाई जैसा लग रहा होगा.

"अम्मा, तुम भी कपड़े निकालो ना!" मैंने मचल कर कहा.

"क्यों नालायक, अपनी मां की चूचियां और बुर देखने को मरा जा रहा है? अरे मैं तेरी मां को नंगा करूंगी तेरे सामने. रघू बेटे, मुन्ना को गोद में ले ले और पकड़ कर रख, नहीं तो अम्मा की जवानी देख कर मुठ्ठ मारने लगेगा शैतान" मंजू मां को पकड़ कर उसकी साड़ी खींचती हुई बोली.

अम्मा इतरा कर नहीं नहीं करती रह गयी पर मंजू ने उसकी साड़ी और चोली खोल डाली. अंदर मां ने आज सफ़ेद ब्रा और पैटी पहनी थी. टाइट ब्रा में से उसके ये मोटे मम्मे छलक आये थे. मोटी मोटी गोरी जांघें और पैटी में से दिखते बुर के उभार को देखकर मैं मचल उठा. अपने आप मेरा हाथ अपने लंड पर गया. रघू ने हंसते हुए मेरे दोनों हाथ पकड़ लिये और मुझे गोद में लेकर कुर्सी पर बैठ गया. उसका लंड मेरी पीठ पर सटा था. उसे मेरी पीठ पर रगड़ते हुए वह मेरे गाल चूमने लगा.

उधर मंजू अब मां की ब्रा उतार रही थी. मां के भारी भरकम स्तन ब्रेसियर से छूटकर लटकने लगे. लगता था जैसे सफ़ेद पके पपीते हों. और मां के निपल! मैं देख कर कसमसा उठा. इतने बड़े निपल किसीके हो सकते हैं ये मैंने कभी सोचा भी नहीं था. बड़े जामुनों के आकार के गहरे भूरे रंग के निपल और उनके चारों ओर छोटी तश्तरी जितने बड़े बड़े गोल चकते!

"देख मुन्ना, क्या मस्त माल है, और बहुत मीठा भी है" मुझे मां के मम्मों को घूरता देखकर मंजू ने मुझसे कहा और मां की एक चूची चूसने लगी. साथ ही उसने मां की पैटी खींचकर उतार दी. काले बालों से भरी उसकी गोरी बुर

देखकर मैं पागल सा हो गया.

मंजू मुंह अलग करके चटखारे लेते हुए बोली. "बहुत मीठा दूध है मुन्ना तेरी मां का, एकदम दुधारू गाय है साली. इसके निपल देखे ना? गाय है गाय!"

मैं तड़प कर बोला. "मां, मुझे दूध पिला ना."

अब तक मां भी चुदासी से सिसकने लगी थी. "जरूर पिलाऊंगी मेरे लाल, मेरे पास ला मंजू मेरे बच्चे को."

"हां हां क्यों नहीं, पर पहले बेटे से मां की पूजा कराऊंगी. खास कर चूत की पूजा. रघू, मुन्ना को इधर ला. आखिर उसे पास से देखने दे कि उसकी मां की चूत कैसी है, जहां से वह जन्मा है, उस छेद को जरा चूमे और चूसे, फिर दूध भी पिला देंगे." मंजू मां के मम्मे दबाती हुई बोली.

रघू मुझे उठा कर पलंग पर ले गया. मुझे उतारकर मां के पास खड़ा होकर बोला. "पहले मेरा लौड़ा चूसो मांजी. आपके बेटे के सामने आपके मुंह में लंड दूंगा. इसने मेरी मां को तो देखा कि कैसे मेरा पूरा लंड मुंह में ले लेती है. अब जरा यह भी देखे कि इसकी चुदेल मां लंड चूसने में कितनी माहिर है. फिर इसे भी सिखा दूंगा" कहके वह अपना लंड मां की चूचियों पर रगड़ने लगा.

मंजू ने मां के कंधे पकड़कर उसे जमीन पर बिठा दिया. उसके पीछे बैठकर उसकी चूचियां मसलती हुई पीछे से मां की जुल्फें उठाकर मां की गर्दन चूमने लगी. मां एकदम मस्त थी. सिहर कर बोली. "कितना अच्छा चूमती है तू मंजू, जरा मेरी बुर खोद ना."

उधर रघू को जल्दी हो रही थी. उसने मां के गाल दबाकर उसका मुंह खोला और दूसरे हाथ से लौड़ा पकड़कर मां के मुंह में पेल दिया. मुझे लगा मां का दम घुट जायेगा उस हलब्बी लंड को लेने में पर उसने तो दोनों हाथ रघू की कमर में डालकर उसे अपने पास खींच लिया और एक ही दम में पूरा लंड निगलकर अपना चेहरा रघू के पेट में दबाकर लौड़ा चूसने लगी.

मैं पास से देख रहा था. मां का मुंह बाया हुआ था और उसके लाल लाल होंठ रघू के लंड की जड़ के चारों ओर सिमटे हुए थे. आंखों में गजब के कामुकता थी. रघू ने मां का सिर कस कर पकड़ा और खड़ा खड़ा आगे पीछे होकर मां के गले को चोदने लगा.

यह नजारा ऐसा था कि मैं सह न सका और पास जाकर बाजू से मां को चिपटकर उसके गाल चूमते हुए अपना लंड मां की कमर पर घिसने लगा. मंजू ने मुझे दूर किया और हंसने लगी. "अरे झड़ जाओगे मुन्ना, ये क्या करते हो. देखा अपनी छिनाल रंडी मां को? कैसी मरती है मेरे बेटे के लंड पर? कैसे गप से निगल लिया दस इंची लंड देखा ना तूने?"

मैं मचल कर बोला. "मंजूबाई मैं भी ऐसा ही लूंगा रघू का लंड अपने मुंह में. रघू मुझे सिखा ना"

रघू मां के मुंह को चोदते हुए बोला. "अगली बार सिखा दूंगा मुन्ना, टाइम लगेगा ऐसा सिखाने में. पर अभी तो तेरी मां का मुंह चोद लूं. साली बहुत मस्त चूसती है मालकिन. ऐसे निगलती है जैसे जन्म जन्म की प्यासी हो."

मंजू रघू को बोली "अब रुक जा बेटे, झड़ मत. आगे का काम करने की तैयारी कर. जरा इस नन्हे गांडू को अपनी मां की बुर की सेवा करने दे. और लंड भी आज ही चुसवा दे, बेचारे को ऐसे तड़पा मत. तू भी तो बार बार कहता था मुझसे कि मां, मुन्ना के कोमल कमसिन गले में पूरा लंड उसके पेट तक न उतार दूं तब तक चैन नहीं मिलेगा मुझे"

रघू ने गहरी सांस ली और मंजू की बात मानकर अपना लंड मां के मुंह से निकाल लिया. अब वह और सूजकर लाल हो गया था. "हां मां, आज ही सिखा देता हूं, पर एकाध बार झड़ कर थोड़ा छोटा हो जाये, ये मूसल तो

इससे नहीं निगला जायेगा."

मां मुंह पोंछती हुई खड़ी हो गयी. मंजू ने मां को पलंग पर बिठाया और उसकी टांगें फ़ैलाकर मुझे बोली. "बैठ नीचे और घुस जा मां की चूत में, चाट ले, एकदम गाढ़ा घी जैसा माल है तेरी ममी का."

अम्मा की जांघों के बीच बैठकर मैंने पहली बार पास से मां की बुर देखी. मोटी फूली, काले काले घुंघराले बालों से भरी बुर में से मस्त महक आ रही थी. मंजूने दो उंगलियों से मां की बुर खोली और लाल लाल छेद मुझे दिखाया. उसमें से घी जैसा चिपचिपा पानी बह रहा था. ऊपर लाल लाल अंगूर जैसा दाना था.

"देखा राजा, तू कहां से जन्मा था? और ये शहद देखा जो तेरी मां बहा रही है? प्रसाद है अनिल बेटे, चाट ले. मुझे अधेड़ औरत की चूत का पानी तुझे इतना अच्छा लगा, तेरी मां की जवान चूत में से तो अमृत बहता है राजा." मंजू मेरे सिर पकड़कर अम्मा की बुर पर दवाते हुए बोली.

मैंने जीभ निकाली और मां की चूत चाटने लगा. क्या स्वादिष्ट महकता शहद था! मैं भाव विभोर होकर लपालप उसे चाटने लगा. अम्माने सिहरकर मेरा सिर पकड़ लिया और प्यार से बालों में उंगली चलाते हुए बोली. "मेरे बेटे, मेरे लाल, सच बता कैसा लगा तुझे मेरी चूत का रस?"

मैं चाटना बंद करके बोला. "अम्मा, बहुत अच्छा है मां, बेजोड़ है. रोज चाटने दोगी ना प्लीज़? अकेले में भी?"

"जब जी चाहे चाट लेना अनिल बेटे, तुझे तो मैं दिन भर चुसवाऊं अपनी बुर मेरे बच्चे, मेरे लाल" मां भाव विभोर होकर बोली.

मैंने अब मां की बुर के पपोटे मुंह में लिये और आम की तरह चूसने लगा. फिर जीभ अंदर डाल दी. मां ने कसमसा कर मेरा सिर अपनी बुर में दबा लिया और अपनी जांघें मेरे सिर के इर्द गिर्द जकड़कर आगे पीछे होती हुई मुठु मारने लगी. "मंजू, तूने तो जादू कर दिया. क्या मस्त ट्रेनिंग दी है मेरे बच्चे को! कैसा चूसता है देख!"

मंजू भी खड़ी खड़ी रघू को अपनी बुर चुसवने लगी. रघू के सिर को टांगों में जकड़कर धक्के मारते हुए बोली. "मालकिन क्या मजा आता है अपने बच्चोंको अपना रस पिला कर, है न? लगता है एक बड़ी जिम्मेदारी पूरी कर रहे हैं. देखो बदमाश कैसे चूस रहे हैं जैसे मिठाई हो! मां की चूत के दीवाने हैं दोनों"

जब मैंने मां के अंगूर से लाल लाल सूजे दाने को जीभ से रगड़ना शुरू किया तो मां दो तीन धक्के देकर एक चीख के साथ झड़ गयी. चूत में से रस का झरना उबल कर बाहर आ गया. मन भर कर मैंने उसकी चूत चूसी. मैं शायद उठता ही नहीं पर मंजू ने मुझे पकड़कर उठा लिया.

रघूने मां की कमर पकड़कर उसे पलंग पर ओंधा पटक दिया और गिड़गिड़ाकर बोला. "अब आज गांड मरवा ही लो मालकिन. अपने गुलाम पर मेहरबान हो जाओ" और मां के चूतड़ों पर झुक कर उन्हें दबाता हुआ बेतहाशा चूमने लगा. उसका तन्नाया लौड़ा मां की जांघों को रगड़ रहा था.

मेरी मां के गोल मटोल गोरे नितंब देखकर मैं और मस्ती में आ गया. लग रहा था कि अभी चढ़ जाऊं और मां की गांड मार लूं. मैं सोच ही रहा था कि क्या कस्तू इतने में मंजूबाई ने मुझे पकड़कर मेरा सिर अपनी बुर में डाल लिया. "आ मुन्ना, तू मेरी चूत चूस ले. तेरी मां तो अब नखरे करेगी. साली डरती है गांड मरवाने से"

मां हंसते हुए रघू को दूर करते हुए पलटी और उसका सिर अपनी बुर में डालती हुई बोली. "तू मेरी चूत चूस और फिर बाजू हट. मैं मुन्ना से चुदवाऊंगी आज, फिर तू मुझे चोद डालना. बड़ा आया गांड मारने वाला!"

"फ़ालतू डरती हो आप मालकिन. इत्ता सा ये नाजुक बेटा आपका, उसने भी रघू से मरवा ली, और तो और कल रात भर मरवाता रहा. देखो जरा भी डरता है क्या रघू से, कैसे मस्त है देखो जरा." मंजू ने मां को समझाया.

मां फिर भी नहीं मानी. नखरे करती रही. आखिर मैंने भी मां से प्रार्थना की. "अम्मा, मरवा लो न, रघू बहुत प्यार से लेता है, बिलकुल धीरे धीरे, ज्यादा नहीं दुखेगा."

"वा रे बड़ा आया सिफ़ारिश करने वाला. तू मरवा कर दिखा एक बार. जरा मैं भी देखूं कितना दम है तुझमें?" मुझे उलाहना देते हुए मां बोली. रघू अब मां की चूत चूस रहा था. तुरंत उठकर मुझसे बोला. "मुन्ना आ जा मेरे राजा, मैं तेरी गांड मार लूं. अरे तेरी गांड तो सोना है रे मेरे प्यारे. फिर मालकिन भी मरवा लेगी. तेरी मां की ये गोरी पहाड़ सी गांड मारने को मैं मरा जा रहा हूं."

मुझे उसका यह वर्णन बहुत अच्छा लगा. सच में मां वैसे भी खाये पिये मांसल बदन की थी. पर उसके कूल्हे अच्छे चौड़े थे और चूतड़ भी तरबूज जैसे थे. पहाड़ सी गांड! रघू के ये शब्द सुनकर मुझे मजा आ गया.

मैंने मंजू की ओर देखा. वैसे मैं मरवाने को तैयार था. रघू के उस मतवाले लंड के फिर से अपने गुदा में घुसने के कल्पना से ही मैं सिहर उठा था, रोमांच से और कुछ डर से. बहुत दुखा था मुझे रघू का लेते हुए.

मंजू मेरे मन की बात समझ गयी. मुझे पुचकार कर बोली. "मरवा ले मुन्ना. आज नहीं दुखेगा. दिखा दे तेरी छिनाल मां को, मरवाना क्या होता है. और तू इतना बहादुर है, चल मैं तेरी अम्मा तुझसे चुदवा देती हूं. तू अपनी मां चोद और मेरा बेटा तुझे चोदेगा. क्यों मालकिन, है मंजूर?"

मां बड़े नखरे से मुस्करायी और हां कर दी. शायद उसने सोचा हो कि मैं घबरा जाऊं और मना कर दूं. पर यह भी हो सकता है कि अम्मा सच में गांड मराने को तैयार थी, बस मेरी गांड चुदते देखना चाहती थी इसलिये बहाना कर रही थी.

जो भी हो, मैं तैयार हो गया. अपनी मां को चोदने के लिये मैं मरा जा रहा था. जहां से मैं निकला था वहीं अपना लंड घुसेड़ना चाहता था.

मंजू बहुत खुश हुई. मुझे उठाकर मां तक ले गयी. अम्मा के चूतड़ों के नीचे तकिया रख कर उसकी कमर उठाई और मुझे बोली. "चढ़ जा बेटे अपने मां पर. चोद डाल हरामन को. रघू, मखखन ले आ बेटे."

मैं कांपता हुआ मां की टांगों के बीच बैठा और झुक कर अपना लंड मां की चूत पर रख कर पेलने लगा. उस गीली चिपचिपी बुर में मेरा लंड सट से समा गया. अम्मा ने हल्की सिसकारी भरी और मुझे खींच कर अपने ऊपर सुला लिया. "हाय बेटे, कितना कड़ा है रे तेरा लंड, और कैसा उछल रहा है मछली जैसा." फिर मुझे चूमते हुए उसने अपनी टांगें मेरी कमर के दोनों ओर जकड़ीं और चूतड़ उछल कर खुद ही चुदवाने लगे.

मैं मां को चोदने लगा. ढीली बुर थी फिर भी मजा आ रहा था. आखिर मेरी मां की चूत थी! मैंने कस कर मां को बांहों में भींचा और हचक हचक कर चोदने लगा.

"अब बना है मादरचोद! चोद डाल अपनी अम्मा को, साली महा रंडी कुतिया है. दस दस लंडों से चुदवा कर ही मन नहीं भरेगा इसका. धंदा करे तो बहुत पैसा कमायेगी ये रंडी! तू क्या कर रहा है मूरख? जल्दी मखखन ला!" मंजू रघू पर झल्लाई. रघू मखखन लेकर वापस आया और बिस्तर पर हमारे पास बैठकर मेरी गांड में चुपड़ने लगा.

मंजू भी आकर बैठ गयी और रघू के लौड़े में मखखन लगाने लगी. रघू का लंड अब बुरी तरह उछल रहा था. आदमी नहीं, घोड़े के लंड जैसा लग रहा था. देखकर मां सिहर कर बोली. "ये डालोगे मेरे फूल जैसे बच्चे की गांड में? मर जायेगा बेचारा! अनिल बेटे, तूने सच में मरायी थी कल? ले लेगा तू ये अपनी गांड में?"

मैं हुमक कर बोला. "हां अम्मा, ले लूंगा. दुखता जरूर है मां पर बहुत मजा आता है मुझे."

रघू ने अपनी उंगलियां चाटीं और मेरे नितंब एक बार चूमकर मेरे ऊपर चढ़ गया. लंड मेरे गुदा पर जमा कर पेलने लगा. मंजू ने मेरे चूतड़ फ़ैलाये और सट से उसका सुपाड़ा मेरे गुदा में उतर गया. गांड में भयानक टीस उठी और मेरे

मुँहे से एक हल्की सी चीख निकल गयी. मां ने चिंतित स्वर में पूछा. "ठीक है ना तू बेटे?" मैंने मुंडी हिलाकर हामी भरी.

"मालकिन, यही मौका है, अपनी चूची इसके मुँह में दे दो. इसका मुँह भी बंद रहेगा और अपनी मां का दूध भी पी लेगा. घबराओ मत, इसे अगर सच में तकलीफ़ होती तो यह भागने की कोशिश करता. पर देखो कैसे आराम से पड़ा है तुम्हारी चूत में लंड डाले." मंजू ने मां को समझाया.

मां ने मेरा सिर अपनी छाती पर दबाकर एक निपल मेरे मुँह में दे दिया. धड़कते दिल से मैं उसे चूसने लगा. मां का दूध? मैं कितना भाग्यवान था! जब मीठे गरम दूध की फुहार मेरे मुँह में छूटी तो मां के प्रति प्यार और वासना से मैं रोने को आ गया. आंखें बंद करके चूची हाथों में पकड़कर नन्हे बच्चे जैसा चूसने लगा.

मां भी हुमक पड़ी. "हाय, मेरा बेटा आज मेरा दूध पी रहा है. मुझे चोदते चोदते मेरी छाती का रस पी रहा है. मंजू मैं तो धन्य हो गयी." कहकर वह नीचे से मुझे चोदने लगी.

सुपाड़ा मेरी गांड में उतारकर रघू अब तक शांत बैठा था. अब उसने फिर लंड पेलना शुरू किया. बहुत प्यार से इंच इंच करके उसने अपना दस इंची लौड़ा आखिर जड़ तक मेरे चूतड़ों के बीच उतार दिया. आज मुझे थोड़ा कम दुखा. बीच बीच में टीस उठने से जब मैं कसमसा उठता तो रघू पेलना बंद कर देता. मां मेरे सिर को और जोर से छाती पर भींच लेती और अपनी चूची मेरे मुँह में अंदर तक ठूस देती.

मां बार बार सिर ऊपर करके मेरी गोरी नाजुक गांड में रघू का मूसल घुसता देख रही थी. ये नजारा देख कर उससे न रहा गया और बोली. "क्या कमाल है, इतनी नाजुक गांड में कैसे जा रहा है यह घोड़े जैसा लंड? और मुन्ना भी मस्त है. इसका और खड़ा हो गया है! गांड फ़टी कैसे नहीं इसकी बड़ा आश्चर्य है मंजू बाई."

रघू जड़ तक लंड उतारकर शांत बैठ गया. "अम्माजी गांड बनी ही है मारने के लिये, फ़टेगी कैसे? अब तो आपको विश्वास हो गया? चलिये अब मैं मारता हूँ. रहा नहीं जाता. इस मुन्ना की गांड याने स्वर्ग की सैर है"

मुझपर लेट कर रघू मेरी मारने लगा. मुझे बोला. "तू चुपचाप पड़ा रह राजा, और मां का दूध पी. तुझे मेहनत करने की जरूरत नहीं है. मैं करता हूँ जो करना है." उसके धक्कों से मेरा लंड अपने आप मां की चूत में अंदर बाहर हो रहा था.

हमने मन भर कर चुदाई की. रघू के धक्के धीरे धीरे तेज हो गये. अंत में वह पूरे जोर से अपना लंड करीब करीब पूरा मेरे चूतड़ों के बीच अंदर बाहर कर रहा था. फ़ाफ़ाफ़ा आवाज आ रही थी. हांफ़ता हुआ रघू बोला. "देखिये मालकिन, ऐसे मारी जाती है गांड, मुन्ना के चेहरे पर के आनंद को देखिये, उसे मैंने स्वर्ग में पहुंचा दिया है. अब आप भी आज रात मरवा लीजिये और मुझ पर दया कीजिये."

अम्मा अचानक झड़ गयी और सिस्कारी भरने लगी. "मेरे बेटे ने मुझे चोद डाला मंजू, साले मादरचोद ने क्या झड़ाया है री अपनी अम्मा को. रघू बेटे, मार ले मेरी गांड पर बहुत दुखेगा रे राजा"

मंजू बोली. "अनिल बेटे और रघू, जरा चोदना बंद करो और मेरी बात सुनो." फिर मुड़ कर मां को बोली. "मालकिन, ऐसा करो, अब मुन्ना से अपनी गांड मरवा लो, वो अभी झड़ा नहीं है. उसका लंड छोटा है, आप आराम से मरवा लोगी. उसके झड़ने के बाद तुरंत रघू से मरवा लेना."

अम्मा और रघू दोनों को बात जच गयी. रघू ने उठकर मुझे अम्मा के ऊपर से उठाया. उसका लंड अभी भी मेरी गांड में गड़ा था. मंजू बोली. "अरे लंड बाहर निकाल मूरख, मुन्ना को आराम से अपनी मां की मारने दे."

रघू बिचक कर बोला. "बहुत अच्छा लग रहा है अम्मा, निकाला नहीं जा रहा है. पूरा चोद दूं मुन्ना को?"

"अरे कल रात भर मारी उसकी, अभी भी आधे घंटे से मार रहा है, बाद में भी रोज मारना है, आज निकाल ले, तेरा

लंड मस्त मोटा है अभी, झड़ कर दूसरी बार खड़ा होगा तो इतना मोटा नहीं होगा. मैं चाहती हूँ तू इस रंडी की गांड अपने सनसनाते लंड से मारे, तब तो मजा आयेगा हरामन को, नहीं तो सस्ते में छूट जायेगी. अब ये हलब्बी सांड सा लौड़ा चूतड़ों के बीच गड़ेगा तो देखना कैसे बिलबिलायेगी साली" मंजू ने समझाया.

मां ना नुकुर करने लगी. "मेरी फ़ड़वायेगी क्या? झड़ ले रे रघू मेरे बच्चे की गांड में, फ़िर घंटे भर बाद मेरी मारना."

अब रघू भी तैश में आ गया. मुझे नीचे पटककर उसने सटाक से अपना लंड मेरी गांड से खींच कर निकाला. इतना मोटा लंड निकलते समय मुझे फ़िर बहुत दर्द हुआ. खास कर जब सुपाड़ा बाहर आया. पर मां की गांड मारने मिलेगी इस बात से मैं बहुत खुश था इसलिये बस जरा सा तिलमिला कर रह गया, चिल्लाया नहीं.

"अब तो जबरदस्ती करनी पड़ेगी अम्मा मालकिन के साथ." रघू मां को पकड़ता हुआ बोला. मंजू ने भी उसकी हां में हां मिलाई. "हां बेटे, ये छिनाल औरत बहुत नखरा कर रही है. चल मैं इसे पकड़ती हूँ, मुन्ना चल चढ़ जा अपनी अम्मा पर."

अम्मा हंसकर बोली. "अरे मेरे दुलारे से तो मैं मरवा लूंगी, तुझसे नहीं मराऊंगी रघू." उसकी आवाज में अजब खुमार था. मालूम नहीं वह रघू को उत्तेजित करने को ऐसा बोल रही थी या सच में उससे गांड नहीं मराना चाहती थी.

मंजू ने उसे ओंथा सुला दिया और मुझे चढ़ जाने को कहा. मैं मां के मोटे विशाल नितंबों को चूमना चाहता था पर अब मंजू और रघू को जल्दी हो रही थी. "बाद में खेल लेना अपनी अम्मा के चूतड़ों से, अभी मार फ़टाफ़ट" मंजू मुझ पर चिल्लाई.

"ठहर मुन्ना, मैं गीला कर देता हूँ" कहकर रघू मां के चूतड़ों पर झुक कर उसके गुदा में मुंह डाल कर चूमने लगा.

मां गुदगुदी होने से हंसने लगी. "अरे छोड़ कैसे जीभ डालता है रे? ऐसे चूस रहा है जैसे वहां तुझे कुछ माल मिलेगा? अरे यह चूत थोड़े ही है कि उसमें से रस निकले!"

रघू उठ कर बोला. "मांजी आपके बदन में तो हर जगह माल मिलेगा. चल मुन्ना, मार अपनी मां की गांड"

मैंने मां के गोरे गोरे चूतड़ों के बीच अपना लंड गाड़ दिया. दो धक्कों में लौड़ा पूरा मां की गांड के अंदर हो गया. वह थोड़ा कराह उठी. "इतना सा बच्चा है मेरा फ़िर भी देख लंड कैसा सख्त है, मुझे इस नन्हे लंड से ही दुखता है रघू, तेरा मैं कैसे लूंगी?"

"घ्यार से लेंगी मांजी, बहुत आराम से दूंगा. अब मार मुन्ना" रघू बोला पर मुझे कहने की जरूरत नहीं थी, मैं अपनी मां की गुदाज गांड की लंड पर की मतवाली जकड़ से इतना मस्त था कि पहले ही शुरू हो गया था. अम्मा के स्तन पकड़कर पूरे जोर से मैं उसकी गांड मारने लगा. "अम्मा, मेरी घ्यारी अम्मा, बहुत अच्छ लग रहा है मां, तुम्हारी गांड मारकर बहुत मजा आ रहा है ममी." कहकर मैं जोरों से लंड पेलने लगा.

'मार बेटे, मजा कर ले. मंजू तू सच कहती थी, ये बच्चे मां की गांड मारकर कितना खुश होते हैं! और तेरा बेटा मेरी गांड के पीछे पड़ा है. तू कह तो मरवा लूँ?" मां ने मंजू को खींचकर उसका चुंबन लेते हुए बोला.

मंजू मां के बाजू में लेट गयी. "मरा लो मालकिन, थोड़ा दर्द होगा पर फ़िर मजा आयेगा. और असल मजा तब आयेगा जब आगे पीछे से एक साथ चुदोगी, एक लंड गांड में और एक बुर में. अपन दोनों अब बारी बारी से इन दोनों बच्चों से एक साथ मराया करेंगे."

मैं पहले ही उत्तेजित था. मां और मंजू की ये बातें सुनकर अचानक झड़ गया. मां हसने लगी. "अरे इत्तेमें हो गया तेरा? अभी अभी तो शुरू किया था."

मंजू बोली. "पहली बार अपनी मां की गांड मार रहा था मुन्ना, जल्दी झड़ेंगा ही. तू फ़िर मत कर मुन्ना, अगली बार अकेले में रात भर गांड मारना तेरी छिनाल मां की, तब इसे शांति मिलेगी. अब रघू बेटे, तू शुरू हो जा. बच्चे से मरवा कर ये चुदेल खुश हो रही है. जरा तेरे मूसल से मरवाये, फ़िर जानूं."

"हां हां, डाल दे रघू, मैं डरती हूं क्या, चल आ जा मैदान में" मां अब तैश में थी. अपनी बुर में उंगली कर रही थी. मुझे हटाकर रघू ने पहले उसकी गांड चूसी. "अब तो माल है मालकिन आपकी गांड में, मुन्ने की मलाई है, उसे तो चख ही सकता हूं." कहकर मां के गुदा को चाटने के बाद उसने मखखन से मां की गांड चिकनी की. दो तीन लोंदे गांड में डाल दिये. मंजू ने अपने बेटे के लंड पर भी खूब मखखन लगा दिया और फ़िर सिरहाने अपनी टांगें पसार कर बैठ गयी.

"मालकिन, अब आप मेरे बुर चूसो आराम से, रस का मजा लो. इससे दर्द कम होगा." कहकर मंजू ने मां का सिर अपनी बुर में डाल लिया और उसे चिपटाकर आगे पीछे होती हुई मां के मुंह पर मुठु मारने लगी.

रघू ने बड़े प्यार से मां के नितंब पकड़कर फ़ैलाये और अपना सुपाड़ा जोर लगाकर अंदर डाल दिया. मां का शरीर सिहर उठा और मंजू की बुर में से ही दबी आवाज में वह चिल्लाई. "उई ५ मां ५, मार डालेगा रे रघू मुझे क्या? लंड है या सोंटा?"

रघू मां की चूत को उंगली से सहलाने लगा. "बस मालकिन, अब दर्द नहीं होगा. आपने खुद देखा कैसे मुन्ना ने भी आसानी से मेरा ले लिया था. अब आप आराम से मेरी अम्मा की बुर चूसो, मैं बड़े प्यार से आपको अपना लौड़ा देता हूं."

धीरे धीरे रघू ने अपना लंड मां के गोरे गोरे चूतड़ों के बीच गाड़ दिया. वह बहुत प्यार और सावधानी से यह कर रहा था. मेरी मारते हुए भी उसने इतनी सावधानी नहीं बरती थी जितनी वह मां की गांड में लंड घुसाते समय बरत रहा था. मां जरा भी कसमसाती तो वह रुक जाता.

पूरा लौड़ा घुसा कर वह रुका और फ़िर उसे धीरे धीरे मुठियाने लगा. "दर्द तो नहीं हो रहा मालकिन" रघू के पृछने पर मां कुछ नहीं बोली, मंजू की बुर चूसती रही. अब वह अपने आप अपने चूतड़ उछलाने की कोशिश कर रही थी. मंजू मुस्कराकर बोली "अरे देखता नहीं कैसे मस्त हो गयी है ये रंडी? अब मार आराम से, साली खूब मरायेगी अब देखना. फ़ालतू नखरा कर रही थी. एक बार चस्का लग गया, मुन्ना, तू देखना अब गांड मराना ज्यादा पसंद करेगी तेरी अम्मा"

रघू तुरंत मां पर चढ़ गया और उसपर लेट कर घचाघच मां की गांड मारने लगा. उसके लंबे तगड़े लंड के गुदा में अंदर बाहर होते ही मां फ़िर कसमसा उठी. पर मंजू ने उसका मुंह अपनी चूत पर दबा कर रखा कि वह कुछ बोल न पाये. मुझे बोली. "मुन्ना, जरा अपनी मां की चूत में उंगली कर बेटे. उसका दाना रगड़ जैसा मैंने सिखाया था. अभी और मस्त हो जायेगी."

मैं बिस्तर पर बैठकर मां की बुर में उंगली घुसेड़कर अंदर बाहर करने लगा. चूत गीली थी. अब मैंने जब मां का दाना पकड़कर मसला तो चूत में से पानी बहने लगा. मां का दबे मुंह कराहना बंद हो गया और वह अपने चूतड़ हिला कर मेरी उंगली और अंदर लेने की कोशिश करने लगी.

रघू अब तक तैश में आ गया था. बोला. "चलो हटो तुम दोनों. अब मैदान में मैं हूं और मालकिन है. अब दिखाता हूं गांड मारना क्या होता है! हाय हाय क्या गुदाज नरम नरम गंड है मुन्ना तेरी अम्मा की, लगता है मुलायम स्पंज में लौड़ा पेल रहा हूं"

मंजू उठकर बाजू में बैठ गयी और मुझे अपनी गोद में बिठा लिया. मेरे मुंह में अपनी चूची देकर वह खुद मुठु मारने लगी. "मुन्ना मेरी चूची चूस और तमाशा देख अब. मैं उंगली करती हूं, तू मेरा दाना पकड़" मंजू को सड़का लगाने में मदद करता हुआ मैं मां की गांड मारी जाने का तमाशा देखने लगा.

अगले आधे घंटे तक रघू ने मां की गांड ऐसे चोदी जैसे फ़ाड़ डालेगा. मां को दबोच कर उसके मम्मे पकड़कर मसलता हुआ वह पूरे जोर से मां की गांड मार रहा था. बस सांस लेने को बीच में एकाध मिनट रुक जाता. मां भी अब आंखें बंद करके बिलबिला रही थी और अपनी ही चूत में उंगली कर रही थी. उसके चेहरे पर वेदना भी थी और उतनी ही वासना भी थी. "मर गयी रघू बेटे, तूने मेरी फ़ाड़ दी राजा. पर बहुत मजा आ रहा है रे, रुक मत, लगा जोर से धक्का, फ़ाड़ दे मेरी गांड और घुस जा उसमें. हा 5 य रे 5"

आखिर रघू जब झड़ा तो जोर से चिल्लाया. फिर लस्त होकर मां पर ढेर हो गया. मां तैश में थी. अब भी गांड चुदाने की कोशिश कर रही थी. बेचारी की यह हालत देख कर मंजू बोली. "रघू, पलट जा और मालकिन को ऊपर ले ले. मुन्ना को कहती हूँ कि अपनी मां को चोद डाले और झड़ा दे."

मैं मां पर चढ़ कर उसे चोदने लगा. मां ने मुझे बांहों में भर लिया और मेरा मुंह चूमने लगी. रघू का लंड अब भी मां की गांड में फ़ंसा था इसलिये चूत खूब टाइट थी. मां की गांड चुदती देखकर मैं ऐस उत्तेजित था कि मैंने मन लगाकर जोर जोर से मां को खूब चोदा. अब तक मैं भी चोदने में काफ़ी उस्ताद हो गया था इसलिये बिना झड़े मैंने तब तक मां को चोदा जब तक वह दो बार झड़ कर लस्त नहीं हो गयी.

"मुन्ना झड़ मत यार, आ मेरी मां की गांड मार ले अब. मेरा फिर खड़ा हो गया है, मैं तेरी मां की फिर मारता हूँ. अम्मा, आज अब रात भर मैं मालकिन की गांड ही मारूंगा. मजा आ गया! तुम जरा मुन्ना को अपनी गांड दे दो" रघू के कहने पर मैंने मंजू की गांड में लंड डाला और मारने लगा.

रघू उठकर मां को बांहों में लिये कुर्सी में बैठ गया और मां को गोद में बिठा लिया. मां के मम्मे दबाता हुआ वह मां को चूमने लगा. मां लस्त उसकी गोद में आंखें बंद करके बैठी थी. रघू मां का मुंह खोल कर उसके मुंह में जीभ डालकर मां का मुखरस चाट रहा था. मुझे नीचे से मां के चूतड़ों में धंसा उसका मोटा लंड दिख रहा था. मां की झड़ी चूत भी एकदम खुली थी और उसमें से पानी बह रहा था.

मंजू ने मेरी ओर देखा और मुस्करा कर बोली. "खजाना देख रहा है अपनी मां का? मेरे भी मुंह में पानी आ रहा है. चल चाटते हैं."

हम दोनों मां के सामने जमीन पर बैठ गये और बारी बारी से उसकी बुर चाटने लगे. मंजू मेरी गोद में बैठी थी और मेरा लंड उसकी गांड में फ़ंसा था. उसे धीरे धीरे उचक कर मंजू की गांड चोदते हुए मैं मां के चूत के रस पर हाथ साफ़ कर रहा था.

मां की चूत चाटकर उसे फिर मस्त करके चुदाई आगे शुरू हुई. अब हम एक ही पलंग पर पास पास लेट कर एक दूसरे की मां की गांड मार रहे थे.

झड़ने के बाद सब एक बार मूतने उठे. रघू आगे चला गया. मैं भी जा रहा था तो रघू बोला. "रुक मुन्ना, अभी मां को जाने दे."

मां बोली. "मंजू, बड़ी जोर से पेशाब लगी है. चल मुझे बाथरूम ले चल. मुझसे चला नहीं जायेगा" वह उठी और मंजू का सहारा लेकर लंगड़ाते हुए धीरे धीरे बाथरूम की ओर निकल पड़ी.

इतने में रघू वापस आ गया. मुझे भी जोर से पेशाब लगी थी. मैं बैठा बैठा कसमसा रहा था. बोला "रघू, जोर से लगी है, मां और मंजू बाई कब आयेंगी? मैं बाहर कर आऊँ?"

वह बोला. "अरे उन्हें बहुत टाइम लगेगा. मेरी मां तो फ़टाफ़ट मूत लेती है. तेरी मां को बहुत टाइम लगेगा. बड़े आराम से मजा लेकर मूत रही होगी मालकिन. तुझे लगी है राजा? आ मेरे पास, मैं करा दूँ."

मैं समझा कि वह मुझे वहीं खिड़की से बाहर करायेगा. पर उसने मुझे दीवार से सटाकर खड़ा किया और खुद मेरे सामने नीचे बैठ गया. बड़े प्यार से मेरे मुन्नाये लंड को उसने चूमा और फिर मुंह में लेकर चूमने लगा.

मुझे अच्छा लग रहा था पर बहुत जोर से पेशाब लगी होने से मैं तिलमिला रहा था. रघू का सिर हटाने की कोशिश करने लगा. "रघू दादा, छोड़ो. मुझे मूतना है."

उसने मुझे आंख मारी और मेरा लंड चूसता ही रहा. आखिर जब मैं उसके बाल पकड़कर खींचने लगा तो लंड मुंह से निकालकर बोला. "अरे मूत ना मेरे राजा. मेरे मुंह में मूत."

मैं उसकी ओर देखता ही रह गया. मेरे चेहरे पर का भाव देखकर वह मुस्करा दिया. "सच में मुन्ना. कब से चाहत है तेरा प्यारा कमसिन मूत पीने की. अरे घबरा मत, मैं गटागट पी जाऊंगा."

मैं फिर भी शरमा रहा था. समझ में नहीं आ रहा था क्या करूं. रघू फिर बोला. "अरे बेटे, उधर तेरी मां भी मेरी मां के मुंह में मूत रही होगी. चल अब नखरा न कर. फिर सब बताता हूं" कहकर वह फिर मेरी लंड चूसने लगा.

मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था. पर अब इतनी जोर से पेशाब लगी थी कि मैं रघू के मुंह में मूतने लगा. रघू के चेहरे पर एक तृप्ति का भाव उमड़ आया. मेरी कमर में बाहें डाल कर उसने कस कर मुझे चिपटा लिया और अपना चेहरा मेरी रानों में दबा कर वह मेरा मूत पीने लगा.

मूतना खतम होते होते मैं उत्तेजित हो गया. रघू जिस प्यार से स्वाद लेकर मेरा मूत पी रहा था, मुझे बहुत अच्छा लगा. उधर यह कल्पना करके कि मां कैसे मंजू बाई को अपना मूत पिला रही होगी, मुझे और मजा आ रहा था. आखिर मैं मूतना खतम होने पर मैं रघू का मुंह चोदने लगा. पर उसने मुझे झड़ने नहीं दिया. मुंह से लंड निकालकर खड़ा हो गया और मुझे गोद में लेकर प्यार करने लगा.

"मजा आ गया छोटे मालिक, प्रसाद मिल गया. लंड अब खड़ा रखो. साली मेरी अम्मा की कस कर गांड मारो रात भर. आज रात भर इन दोनों औरतों की गांड मार मार कर फुकला करनी है"

मैंने पूछा. "बताओ ना रघू, ऐसा क्यों करते हो?"

"अरे मजा आता है. असल में बहुत पहले से मेरी मां तेरी मां का मूत पीती है. उसकी दीवानी है. कहती है मालकिन का प्रसाद मिलता है. आखिर तुम लोग हमारे मालिक हो. तुम्हारा नमक खाते हैं. पर इस तरह से नमक पीने में और मजा आता है."

"तो क्या रोज पीती है मंजू बाई मां का मूत?" मैंने आश्चर्य चकित होकर पूछा.

"हां करीब करीब रोज, खासकर जब मस्त चुदाई होती है. तेरी मां भी बड़े मजे से मूतती है. रुक रुक कर बहुत देर प्यार से अपनी नौकरानी को पिलाती है. और एक दो बार मैंने भी पिया है. असल में मेरी मां मुझे पीने नहीं दे रही थी, कहती थी सिर्फ उसका हक है. मैंने जिद करके पी लिया. मजा आ गया. जब फ्रश पर मुझे लिटाकर मेरे सिर के ऊपर उकड़ू बैठकर तेरी मां मेरे मुंह में मूतती है तो लगाता है जैसे देवीमां का प्रसाद पा रहा हूं. पर यह वरदान बस कभी कभी मिलता है. हां अपनी मां का मूत मैं रोज पीता हूं. पर मेरे मन में हमेशा तेरा मूत पीने की इच्छा थी. तू मुझे इतना प्यारा लगता है. मैं तो बचपन में ही शुरू हो जाता पर मां बोली, चुदाई शुरू हो जाने दे, फिर पिया कर. अब सही है. मैं अपने मालिक, तेरा मूत पिऊंगा और मेरी मां अपनी मालकिन का मूत पियेगी."

सुनकर मैं लंड पकड़कर मुठिया रहा था. गरम होकर बोला. "रघू, मैं भी मां का मूत पिऊं?"

"पी लेना बेटे पर अकेले में. आज नहीं. मालकिन को खूब खुश करके फिर पूछना, वे मान जायेंगी. वैसे किस मां को अपने बेटे को अपना मूत पिलाने में मजा नहीं आयेगा! मेरी मां तों इस ताक में ही रहती है कि कब मैं उसे अकेला मिलूं और कब वह मेरे मुंह में मूत दे! अब चुप हो जा. दोनों आ रही हैं."

मां और मंजू वापस आये, मंजू मुंह पोछ रही थी और खुश लग रही थी. मां भी बड़ी तृप्त लग रही थी और मंजू

की कमर में हाथ डालकर उसे अपने पास खींचकर प्यार से चूम रही थी. मेरे और रघू के चेहरे के भाव देखकर दोनों हमारी ओर देखने लगीं. मंजू ने आंख मार कर कहा. "रघू बहुत खुश लग रहा है, क्या बात है?"

रघू चुप रहा और हंसता रहा. मां भी समझ गयी होगी पर कुछ नहीं बोली.

रघू जाकर कुछ बड़े मद्रासी केले ले आया. मंजू को बोला. "अम्मा, अब तुम जरा अपनी मालकिन की सेवा कर लो, मैं मुन्ना को लंड चूसना सिखा दूँ" मैं खुशी से उछल पड़ा और रघू से लिपट गया. वह हंसते हुए बड़े प्यार से मुझे गोद में लेकर बैठ गया. उधर मंजू मां को लेकर पलंग पर लेट गयी. पहले तो उन्होंने खूब चूमाचाटी की, फिर वे दोनों सीधे सिक्सटी नाइन करने में जूट गयीं. उनका ध्यान हमारी भी ओर था, वे बड़े गौर से देख रही थीं कि रघू कैसे मुझे लंड चूसना सिखाता है.

रघू ने केला छीलते हुए बोला. "बेटे, इसमें कोई बड़ी बात नहीं है, अपने गले को ढीला करना सीख लो बस. अब देख, ये दस इंच की मद्रासी केला है, इसे निगलने के प्रैक्टिस कर ले, बिना दांत लगाये, फिर मेरा क्या, घोड़े का भी लंड निगल लेगा तू. तेरा अम्मा को भी मेरी अम्मा ने ऐसे ही सिखाया था. याद है ना अम्मा?"

मां की चूत में से सिर उठाते हुए मंजू बोली. "हां बेटे, ये रंडी तो आधे घंटे में सीख गयी थी, मुन्ना भी उसीका चुदेल बेटा है, वो भी फ़टाफ़ट सीख जायेगा देखना."

"चल मुन्ना मुंह खोल, मैं ये केला तेरे मुंह में देता हूँ, मुंह बंद नहीं करना. निगलते जाना, जितना हो सके. बस दांत नहीं लगाना." मुझे गोद में बिठाकर रघू मेरे खुले मुंह में केला पेलने लगा.

तीन इंच मोटा वह चिकना केला पहली बार में मैंने करीब एक तिहाई ले लिया और फिर मुझे कैसे तो भी होने लगा. रघू ने केला निकाल लिया और मुझे सम्हलने का मौका देकर फिर चालू हो गया. "ले ले मुन्ना, समझ मेरा लंड ले रहा है, फिर तुझे मजा आयेगा, तू नहीं घबरायेगा."

आखिर मैंने आधे से ज्यादा केला निगल लिया. सात आठ इंच केला मेरे मुंह में था और आधा मेरे गले के नीचे था. मेरा गला बारबार थूक निगलने की कोशिश करता और उससे वह केला और अंदर घुसता जाता. आखिर पूरा केला मेरे मुंह में चला गया, सिर्फ़ एक छोर बचा जो रघू ने पकड़ कर रखा था.

"शाबास मेरे बच्चे, मालकिन, अम्मा, ये तो पांच मिनट में सीख गया." रघू खुश होते हुए मेरे गाल चूमकर केले को मेरे गले में थोड़ा अंदर बाहर करते हुए कहा. "देख मुन्ना, जब मैं तेरे गले को चोदूंगा तो ऐसे लगेगा. घबराना मत." और वह केले से मेरा गला चोदने लगा.

मां को अब अपने बेटे के नन्हे गाले में अपने चोदू नौकर का तगड़ा लौड़ा घुसते देखने की जल्दी हो रही थी. "मुन्ना, अनिल बेटे, अब निगल ले रे रघू का लौड़ा, आखिर मैं भी देखूँ कि इस चुदेल मां के गांडू बेटे में कितना दम है!"

रघू का लंड अब तक खड़ा हो गया था. कस कर नहीं फिर भी अच्छा खासा लंबा हो गया था. "एकदम सही खड़ा है बेटे, तुझे भी तकलीफ़ नहीं होगी. आ जा, बैठ जा मेरे सामने." कहकर रघू ने केला मेरे मुंह से निकाल लिया और बाजू में टेबल पर एक प्लेट में रख दिया.

मैं मुंह खोल कर रघू की जांघों के बीच बैठ गया. उसका सुपाड़ा तो मैंने बहुत बारी चूसा था इसलिये उसमें मुझे कोई तकलीफ़ नहीं हुई. अब रघू ने मेरे सिर के पीछे एक हाथ रखकर उसे सहारा दिया और दूसरे हाथ से अपना लंड पकड़कर पेलने लगा.

लंड आराम से मेरे गले में धंसने लगा. केले से मेरा मुंह और गला भी चिकने हो गये थे इसलिये आराम से लंड मेरे मुंह में उतर रहा था. जल्द ही आधे से ज्यादा लंड मेरे मुंह में था. सुपाड़ा अब मेरे गले को चौड़ा कर रहा था. मेरा दम अब कुछ घुट रहा था पर मैं फिर भी लंड निगलने की भरसक कोशिश कर रहा था. पर लंड अब अंदर सरकना बंद हो गया था.

रघू ने कुछ देर लंड पेलना बंद कर दिया. मेरे बाल सहलाते हुए बोला. "कोई बात नहीं मुन्ना, आज काफ़ी सीख गया है, अब बस कुछ देर ऐसा ही बैठा रह, फ़िर मैं निकाल लूंगा, तू बस गले को ढीला छोड़ और लंड को गले में रखने की प्रैक्टिस कर"

मैं रघू का लंड मुंह में लिये बैठा रहा. अब गले में फ़से उस मांसल कड़े होते हुए लंड से मेरा जी घबरा रहा था पर मजा भी आ रहा था. लगता था लंड नहीं रसीला गन्ना है.

मंजू बोली. "निकाल ले बेटा, अब आ और अपनी मालकिन की गांड मार ले फ़िर से"

"आता हूं अम्मा, मुन्ना के मुंह से लंड तो निकाल लूं. मुन्ना, तू गला ढीला छोड़ बेटे" मैंने गला भरसक ढीला किया और लंड मुंह से निकालने के बजाय रघू ने मेरा सिर पकड़कर सहसा कस कर अपने पेट पर दबाते हुए अपने चूतड़ों के एक जोरदार धक्के से पूरा लंड जड़ तक मेरे मुंह में उतार दिया. मेरे होंठ रघू के पेट पर आ टिके.

मुझे लगा जैसे मेरा दम घुट जायेगा. सांस लेना दूभर हो गया और गला अपने आप खुल बंद होने लगा. मेरे छटपटाने को नजरंदाज करते हुए रघू ने मेरा सिर कस कर अपने पेट पर दबाये रखा और आगे पीछे होकर मेरा मुंह चोदने लगा.

मेरी बेचैनी देखकर मंजू हंसने लगी. "कैसा उल्लू बनाया उसे. मुन्ना सोच रहा होगा कि तू लंड बाहर निकाल रहा है."

मां बोली. "अरे देख कैसे कर रहा है! उसे सांस तो लेने दे"

रघू बोला. "आप चिंता न करो मांजी. याद नहीं आपको भी ऐसे ही किया था तब जाकर आप पूरा लंड मुंह में लेना सीखी थीं. अभी देखो दो मिनट में मुन्ना शांत हो जायेगा और फ़िर प्यार से चूसेगा मेरा लौड़ा"

उसने मेरा सिर कस कर दबाये रखा और बिना किसी दया के मेरा मुंह चोदता रहा. आखिर मेरा गला अपने आप फ़ैलकर उसके मोटे लंड के इर्द गिर्द बैठ गया. मेरे थूक की वजह से गला एकदम चिकना भी हो गया था. उसमें रघू का लंड फ़िसल रहा था. सुपाड़ा किसी पिस्टन जैसा गहरा मेरी छाती में मेरी निगलने की नली को चौड़ा कर रहा था.

उस मोटे लंड को चूसने में अब मुझे बहुत मजा आ रहा था. लग रहा था कि अभी उसमें से वीर्य निकले तो मैं सब पी जाऊं.

रघू ने मेरा गला और कुछ चोदा और फ़िर लंड निकाल लिया. मैं झल्लाया क्योंकि रघू के लंड का मैं दीवाना हो चुका था, उसका रस पीना चाहता था. पर रघू ने समझाया. "अब तेरी मां की गांड मारनी है राजा. आज मैंने प्रण लिया है कि मालकिन की रात भर मारूंगा. लंड कहां जाता है रे, तुझे फ़िर चुसा दूंगा. अब तो तू लेना भी सीख गया. एक और तरीका है लेने का, बड़ा मजेदार और हौले हौले, उसमें ज्यादा तकलीफ़ भी नहीं होती, वह तुझे बात में सिखा दूंगा."

मेरे मुंह से लंड निकालकर रघू ने मां की गांड में फ़िर से ढेर सा मखखन लगाया और शुरू हो गया. मैं भी मंजू पर टूट पड़ा. उस रात कोई नहीं सोया. बस ऐसे ही हम दोनों बेटे उन चुदल माताओं की गांड चोदते रहे. रघू ने तो मां की हालत खराब कर दी. रात भर उसकी गांड से लंड नहीं निकाला. मां को दबोच कर उसपर शिकारी जैसा चढ़ा रहा. हचक हचक कर गांड मारता, झड़ता और आराम करने लगता. लंड खड़ा होते ही फ़िर जुट जाता. मां अब अधमरी सी लस्त पड़ी हुई चुपचाप मरा रही थी.

मैंने भी मंजू की गांड एक बार मारी पर उसके बाद वह अपनी चूत में मेरा मुंह लेकर लेट गयी और रात भर मुझसे चुसवाती रही. "तेरा यह कमसिन मुंह है ही इतना कोमल और प्यारा कि चोदने को ही बना है राजा. मैं या मेरा बेटा इसे हमेशा चोदा करेंगे मुन्ना, नहीं तो मन नहीं भरता हमारा."

सुबह एक बार फिर उसने मुझे अपनी गांड चोदने दी. बाद में हमने अपनी अपनी मां की गांड जीभ से साफ़ की और उसमें से वीर्य चूसा. मुझे बहुत माल मिला, मां की गांड में से आधी कटोरी के करीब रघू का वीर्य मैंने चूसा होगा.

उस दिन सब इतने थक गये थे कि दिन भर सोये. रात को भी कोई चुदाई नहीं हुई. दूसरे दिन से हमारी चुदाई सधे ढंग से चल पड़ी. सामूहिक चुदाई अब बस हफ़्ते में एक दो बार किसी किसी रात को होती थी. मां ने ही कहा कि बार बार करने से मजा चला जायेगा. हां अकेले में जोड़ी बनाकर हम कभी भी चोद लेते थे.

दोपहर को मैं अक्सर मां के कमरे में सोता. उसका दूध पीते हुए उसे चोदता या उसकी चूत चूसता. मां के गोरे मांसल शरीर को चूमना मुझे बहुत अच्छ लगता था. जब भी मौका मिलता मैं उसकी गोरी पीठ, नितंब या जांघों और पेट को चूमता. नितंबों के बीच मुंह छुपाकर मां का गुदा चूसना भी मेरा मनपसंद शौक बन गया था. वह मुझपर बहुत खुश थी. मुझे अपनी बुर चुसाना और दूध पिलाना उसे बहुत अच्छ लगता था. मेरा लंड भी वह खूब चूसती थी. अपने कमसिन बेटे के वीर्य का स्वाद उस मस्त कर देता था.

मां की गांड मारने मुझे कम मिलती. जब वह बहुत मूड में होती थी या जब मैं उसे चूस कर या चोद कर खुश कर देता था तभी मारने देती. वह अपनी गांड का इस्तेमाल इनाम जैसे करने लगी थी. बात यह थी कि रघू अब उसकी गांड के पीछे दीवाना था. मां को उससे मराना ही पड़ती थी नहीं तो वह मां को न चोदता, न लंड चूसने देता. मां तो उसके लंड की दीवानी थी. इसलिये मन भर कर चुदाने के बाद इनामस्वरूप अपनी गांड दे देती रघू को.

मंजू ने तो मुझे अपनी चूत का गुलाम बना लिया था. अपनी मालकिन के बेटे से बुर चुसवाने में उसे बहुत मजा आता. बस जब भी हमारी जोड़ी जमती, मेरी सिर अपनी जांघों में दबाकर शुरू हो जाती. घंटों चुसवाने के बाद मुझे अपनी गांड मारने देती.

रघू से मेरा संभोग कई बार होता. अब स्कूल जाते समय वह मुझे नहीं भोगता था क्योंकि घर में आराम से वह कभी भी मेरे ऊपर चढ़ सकता था. हां बीच में साइकिल रोक कर मेरा मूत पी लेता. जब मां और मंजू आपस में जोड़ी बनाकर कमरे में घुस जाते तो रघू मेरे कमरे में आ जाता. वह मेरी गांड का दीवाना था ही, घंटों मेरी गांड मारता. और मुझसे मरवाता. मुझसे गांड मरवाने में उसे बहुत मजा आता. मैं भी मन लगाकर बिना झड़ें उसकी गांड खूब देर तक मारता और उसे संतुष्ट कर देता.

अब रघू मेरा मुंह भी चोदता. खड़ा लंड धीरे धीरे कैसे निगलना यह तो उसने सिखा दिया था. अगली बार जब हम दोनों अकेले थे तो उसने दूसरा तरीका भी मुझे सिखा दिया. मेरी गांड मारने के बाद उसने अपना झड़ा लंड मेरे मुंह में दे दिया और बिस्तर पर मेरे बाजू में लेट गया. अपनी जांघों में मेरा सिर उसने जकड़ लिया और प्यार से मुझसे अपना झड़ा लौड़ा चुसवाता रहा.

पहले उसका झड़ा लंड बड़े आराम से पूरा मेरे मुंह में आ रहा था. नरम नरम गाजर जैसे उस लौड़े को जीभ पर लेकर मैं चूसता रहा. फिर धीरे धीरे वह खड़ा होने लगा. यह भी बड़ी सुखद अनुभूति थी. रघू का लंड कड़ा होते हुए आगे सरककर मेरे मुंह में और गहरा घुसता जा रहा था.

जल्द ही वह मेरे गले में पहुंच गया. रघू के सिखाये अनुसार मैंने गला ढीला छोड़ रखा था इसलिये मुझे जरा भी तकलीफ़ नहीं हुई, आराम से उसका दस इंची मैंने गले में ले लिया.

रघू बहुत खुश हुआ. "क्या बात है मुन्ना, अब बना है तू मेरा पूरा गांडू चुदल गुड्डा. पर अब तेरा मुंह चोदूंगा. तू चूसता रह." कहकर मुझे पलंग पर लिटा कर मेरे ऊपर लेटकर वह मेरा मुंह चोदने लगा.

उसने मन भर कर मेरा मुंह चोदा जैसे चूत चोद रहा हो. अंत अंत में तो वह कसकर धक्के लगाता हुआ मेरे गले में अपना लंड चला रहा था. मेरा दम घुट रहा था, उसके पेट ने मेरे चेहरे को पूरा ढक लिया था पर मैं उसके चूतड़ों को बांहों में भर कर उसकी गांड में उंगली करता हुआ मुंह चुदवाता रहा. रघू झड़ा तो उसका वीर्य सीधे मेरे पेट में गया जबकि मैं उसका स्वाद चखना चाहता था. मैंने बाद में उससे शिकायत की तो वह मेरा चुम्मा लेकर बोला कि अगली

बार से झड़ते समय वह लंड आधा बाहर खींच लेगा.

उसके बाद उसका यह खेल बन गया. घंटों वह मेरे मुंह में लंड डाले पड़ा रहता और हौले हौले मेरा मुंह चोदता. बहुत बार सामूहिक चुदाई में भी वह यह करता क्योंकि उसका हलब्बी लंड मेरे जरा से मुंह में घुसा देखकर मां और मंजू को भी मजा आता था.

आखिर एक दिन मुझे मां की बुर के शरबत का प्रसाद मिल ही गया. असल में मेरे जिद करने पर एक बार मंजू ने चुपचाप मुझे भी बाथरूम में ले जाकर दिखाया कि कैसे वह रघू के मुंह में मूतती है. जमीन पर लेट कर अपनी मां को अपने सिर पर बिठाकर उसका मूत पीते हुए रघू को देखकर मैं तैश में आ गया. रघू का खड़ा लंड, उसके मुंह में मूतती हुई उसकी मां, मंजू की बुर से निकलती हुई खल खल करके उसके बेटे के मुंह में गिरती मूत की रुपहली धार और उसके चेहरे पर की असीम सुख और वासना की छया मुझे पागल कर गयी. मैं भी मंजू से प्रार्थना करने लगा कि मंजू बाई, मुझे भी अपना मूत पिला दो.

वह कानों को हाथ लगाकर बोली. "राम राम मुन्ना, यह क्या कह रहे हो? मैं तुम्हारी नौकरानी हूँ बेटे, जाओ मालकिन से कहो, वह तेरी मां है, जरूर तुझे पिला देगी, घबरा मत!"

अखिर उस दिन दोपहर को मैंने अपना प्रसाद पा ही लिया. मां आज मुझे दूध पिलाने के बाद बुर मुझसे बुर चुसवाने के बाद अपनी बुर में उंगली करते हुए बोली. "हाय बेटे, आज कुतिया जैसे पीछे से चुदने का बहुत मन कर रहा है. रघू बहुत अच्छा चोदता है रे, पर वो तो खेत पर गया होगा. जा, एक ककड़ी या बैंगन ले आ और मेरी मुठु मार दे"

मैंने कहा. "मां, मैं चोद देता हूँ ना, मुझे भी पीछे से चोदना आता है, मंजू बाई ने सिखाया था. रघू की भी बहुत बार ऐसे आसन में गांड मारी है"

मां अब जोर से हस्तमैथुन कर रही थी. बोली. "तू बहुत अच्छा चोदता है बेटे पर झड़ जाता है. आज तो घंटे भर चुदाने का मन हो रहा है. ऐसा लगता है कि कोई पटक पटक कर चोदे मुझे हर आसन में. तू नहीं चोद पायेगा मेरे लाल!"

मैंने मां से मिन्नतें की तो वह आखिर तैयार हो गयी. घुटनों और कोहनियों के बल पलंग पर झुक कर बोली. "ठीक है आ जा मैदान में, देखें कितना दम है मेरे इस नाजुक बच्चे में."

मैंने उस दिन अपना पूरा जोर लगा दिया. इस कुत्ते कुतिया वाले आसन में मैंने एक सधी लय से अपनी मां को इतना चोदा कि वह झड़ झड़ कर बिलकुल तृप्त हो गयी. बीच में जब वह आराम करने को लेट गयी तो चूत में से लंड निकलकर मैं उसकी बुर चूसने लगा. बाद में फिर मां पर आगे से चढ़कर उसे कस कर चोदने लगा. वह नहीं नहीं कहती रह गयी पर मैंने उसकी एक न सुनी.

अंत में जब वह चुद चुद कर अधमरी सी हो गयी तो मैंने मां की गांड मार ली. वह चुपचाप पड़ी रही और शांति से गांड मरवा ली. आज मेरे लंड ने मेरा खूब साथ दिया और कस कर खड़ा रहा. मेरे झड़ने के बाद मुझे बाहों में भरकर अपनी चूची मुंह में देते हुए मां बोली. "आज तो कमाल कर दिया मेरे लाल. मां की क्या सेवा की है तूने. ले दूध पी ले, थक गया होगा. अभी दो घंटे पहले तुझे पिलाया था पर तूने इतना मस्त चोदा है मुझे कि फिर स्तन भर आये हैं मेरे. तू सच में बड़ा मंजा चुदक्कड़ हो गया है रे!"

मां के स्तन खाली करके मैंने मां के सीने में चेहरा छुपा कर से पूछा. "मां, इनाम नहीं दोगी?"

मां मेरी पीठ सहलाती हुई बोली. "अब गांड तो मार ली तूने! और क्या दूँ बोल?"

मैं थोड़ा शरमा कर बोला. "मुझे अपना मूत पिलाओ ना मां! मंजू बाई को तुम पिलाती हो, कभी कभी रघू को भी पिलाती हो. मैं भी पिऊंगा."

मां मेरी ओर देखती रही. "तुझे रघू ने बताया शायद. बदमाश कहीं का! मैं उसी दिन रात को समझ गयी थी. उसने तेरा मूत पिया?"

मैंने मां को सब बता दिया. वह मुस्कराती रही. "अरे बड़े चुदेल हैं दोनों मां बेटे! मैंने बहुत दिन पहले जब तू छोटा था, एक दिन चिढ़ कर मंजू को नौकरी से निकाल दिया था. मेरी चूत पर इतनी फ़िदा थी वह कि बार बार मेरी बुर चूसते समय काट खाती थी. एक बार तो मेरे पपोटे से खून निकल आया था. मैंने जब गुस्से में आकर निकाल दिया तो रोने लगी. तब मैंने जान बूझ कर उसे सजा देने को कहा कि मेरा मूत पिये तो नौकरी पर रख लूंगी. पर सजा के बजाय ये उसके लिये इनाम हो गया. ऐसे मस्त होकर उसने मेरा मूत पिया कि मुझे भी मजा आने लगा उसे मूत पिलाने में."

थोड़ा रुक कर मां आगे बोली. "बहुत अच्छा लगता है मुझे उसके मुंह में मूतकर. लगता है उसपर एहसान कर रही हूं. ऐसे पीती है जैसे शरबत हो. वो रघू भी दीवाना है पर मंजू मेरे मूत पर अपना अधिकार समझती है, रघू को बस कभी कभी पीने देती है. अपने बेटे को अपना मूत पिलाती है और उसे कहती है कि वह अपने मालिक का याने तेरा मूत पिये. इसलिये जब से वह तुझे चोदने लगा, मैं समझ गयी थी कि अब वो दिन दूर नहीं जब रघू तेरा मूत पीने लगेगा. पर बेटे, उनका ठीक है, वे अपना नौकरों का कर्तव्य कर रहे हैं. तू क्यों मेरा मूत पीने की जिद कर रहा है?"

मैंने सिहर कर कहा. "मां, तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो. मैं तुम्हारे शरीर का हर रस चखना चाहता हूं. तुंहारी गोरी गोरी मोटी मोटी बुर इतनी रसीली लगती है कि मैं पेट भर कर उसमें से शरबत पीना चाहता हूं. पिलाओ ना मां, मेरी कसम, तुम जो कहोगी मैं करूंगा."

मां मेरी ओर देखती रही. उसकी आंखों में बड़ा दुलार और वासना थी. जब उसने देखा कि मैं सच में उसका मूत पीना चाहता हूं तो वह मुझे बाहों में भर कर बेतहाशा चूमने लगी. "चल मेरे लाल, मेरे बच्चे, तेरी ये इच्छा पूरी कर देती हूं. बोल कैसे पियेगा? गिलास में दू?"

मैं मचल कर बोला. "नहीं अम्मा, मैं तो आपकी बुर से सीधे पिऊंगा. औरतें बैठ कर मूतती हैं वैसे मेरे सिर पर बैठकर मूतो. चलो ना बाथरूम में."

मां को हाथ से पकड़कर खींचता हुआ मैं बाथरूम ले गया. वह हंसती हुई मेरे पीछे पीछे खिंची चली आई. उसे बहुत अच्छा लग रहा था कि उसका लाड़ला उसके मूत का इतना दीवाना हो गया है. बाथरूम में मैं तुरंत जमीन पर लेट गया और मां को खींचकर बोला. "जल्दी आओ मां, बैठो मेरे मुंह पर"

मां बड़ा नखरा करते हुए आराम से मेरे सिर के दोनों ओर पैर जमा कर बैठ गयी. उसकी बुर अब मेरे मुंह के ऊपर लहरा रही थी. बुर में से रस टपक रहा था, अम्मा बहुत मस्ती में आ गयी थी. "मंजू और रघू भी ऐसे ही पीते हैं. कभी कभी उन्हें खड़े खड़े भी पिलाती हूं. तुझे बाद में पिलाऊंगी वैसे. मुझे उसमें ज्यादा मजा आता है. लगता है जैसे मैं कोई देवी या रानी हूं और अपने भक्त को सामने बिठा कर अपना प्रसाद दे रही हूं. चल मुंह खोल अब, इतना मूतंगी तेरे मुंह में कि तुझे पिया नहीं जायेगा. और गिराना नहीं नहीं तो फिर कभी नहीं पिलाऊंगी."

"मां, मैं एक बूंद भी नहीं गिरने दूंगा आपके शरबत की" कहकर मैंने मुंह खोला और मां बड़ी सावधानी से निशाना लेकर उसमें मूतने लगी. खलखलाती एक तेज धार मेरे मुंह में गिरने लगी. मैंने मूत मुंह में ही भर लिया. मां ने मूतना बंद कर दिया. झल्ला कर बोली. "अब निगलता क्यों नहीं मूरख? गुटक जा जल्दी से."

मैंने मुंह बंद किया और मां के उस खारे कुनकुने मूत का स्वाद लेने लगा. मेरा लंड ऐसे उछल रहा था जैसे झड़ जायेगा. स्वाद ले कर आखिर मैंने मूत निगला और मां को बोला. "जली नहीं करो अम्मा, मैं मन लगाकर चख कर पिऊंगा आपका मूत"

मां हंसने लगी. "बिलकुल मंजू जैसा करता है तू. वह भी कभी कभी आधा घंटा लगा देती है मेरा मूत पीने में. ठीक है, आज धीरे पिलाती हूं पर समझ ले मेरे लाल, अब से मेरा मूत तुझे ही पिलाऊंगी. मंजू तो कभी कभी पीती है, पर तू तो मेरे साथ ही रहेगा. जब पिशाब लगेगी, तेरे मुंह में करूंगी. बोल है मंजू?"

मैं तो खुशी से उछल पड़ा. मां ने अगले दस मिनट मुझे बहुत प्यार से अपना मूत पिलाया. बीच में वह थक कर उठ कर दीवाल से टिक कर खड़ी हो गयी. "पैर दुख रहे हैं बेटे आज अब खड़े खड़े पिलाती हूं. आ जा मेरी टांगों के बीच बैठ जा और मुंह ऊपर करके मेरी बुर से सटा दे. देख कैसे मस्त पिलाती हूं. और अब जरा जल्दी जल्दी पी, मैं जोर से मूतंगी अब."

मैं मां की टांगों के बीच पलथी मार कर बैठ गया और उसकी टांगें पकड़कर अपना चेहरा ऊपर करके मां की बुर को मुंह में ले लिया. मेरे सिर को कसकर अपनी बुर पर दबा कर मां मूतने लगी. अब वह जोर से मूत रही थी और उसकी धार सीधे मेरे गले के नीचे उतर रही थी. मैं भी गटागट पी रहा था. मां अब इतना उत्तेजित हो गयी थी कि मूतना खतम होने पर भी मुझे नहीं छोड़ा और खड़े खड़े ही ऊपर नीचे होकर उसने मेरे मुंह पर मुठ मार ली.

हम बाथरूम के बाहर निकले तो मंजू सामने थी. झाड़ू लगा रहा थी. साली हमें देखते ही समझ गयी. खिलखिलाकर हंसते हुए बोली. "चलो, अखिर बेटे को भी अपना प्रसाद पिला दिया मालकिन. मेरा भी खयाल रखना, नहीं तो मुझे प्यासा रखोगी आप."

मां बोली. "तू चुप रह, बहुत शरबत है मेरे पास. सारे खानदान को पिला सकती हूं. तुझे भी पिलाऊंगी पर अब मुन्ना का हक पहले है. है ना मेरे राजा?" कहकर लाड़ से उसने मुझे चूम लिया. फिर मेरे लंड को पकड़कर मुझे वापस अपने कमरे में ले गयी. बोली "इतना मस्त खड़ा हो गया मुन्ना तेरा फिर से? लगता है मेरे मूत का असर है. ऐसी बात है तो अब तुझसे चाहे जितना चुदा सकती हूं मैं. जब तू लस्त पड़ेगा तो अपना यह गरमागरम शरबत पिलाऊंगी और मस्त कर दूंगी तुझे. चल अब मैं फिर चुदा लूं एक बार अपने राजा बेटा से!"

मैं तो मां के मूत का दीवाना हो गया. मां ने वायदे के अनुसार मुझे रोज पिलाना शुरू कर दिया. जब भी मूड में होती और मैं घर में होता तो मुझे पास बुलाकर बाथरूम में ले जाती. कुछ दिन बार तो मैं इस सफ़ायी से पीने लगा कि बाथरूम जाने की भी जरूरत नहीं पड़ती थी. कहीं भी मां की बुर से मुंह लगा लेता और वह उसमें मूत देती. मंजू को चिढ़ाने को वह जानबूझकर उसके सामने मेरे मुंह में मूतती.

अब जब सामूहिक चुदाई होती तो हमसब एक साथ बाथरूम जाते. बहुत मजा आता था. मां मंजू के मुंह पर मूतने बैठ जाती थी और रघू मेरा लंड मुंह में लेकर मेरा मूत पी लेता था.

बाद में अक्सर हम अदल बदल कर लेते थे. मां रघू के मुंह में मूतती और मैं मंजू के मुंह में. पहले मुझे बहुत अटपटा लगा. मंजू बाई नौकरानी भले ही हो, पर औरत थी और वह भी मस्त चुदेल औरत जिसने मुझे बहुत सुख दिया था. उसके मुंह में मूतना मुझे ठीक नहीं लग रहा था. पर उसीने मुझे समझाया. "शरमा मत मुन्ना, तू इतना प्यारा है, एकदम गुड्डे जैसा. तेरा मूत तो मेरे लिये तेरी मां के मूत जैसा ही मजेदार है. मूत ना राजा, पिला दे इस नौकरानी को उसके हक का शरबत!"

अखिर मां ने भी समझाया और मैंने मंजू के मुंह में मूता. मंजू ने भी बड़े चाव से उसे निगला. मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि मंजू जिस प्यार और दुलार से मेरा मूत पीती थी उससे मैं समझ गया था कि मेरे और मां के प्रति उसकी वासना कितनी गहरी थी. अब कई बार वह मेरा मूत चुपचाप पी लेती. बहुत बार तो जब मुझे नींद से जगाने आती, तो मेरा लंड चूस कर मेरा मूत पी कर की मुझे जगाती और फिर उठने देती.

बाद में एक बार जब मां बाहर गयी थी और मैं और मंजूबाई घर में अकेले थे, मैंने उसका मूत पीने की बहुत जिद की. मंजूबाई के कसे सांवले शरीर और उसके बुर रस का तो मैं दीवाना था ही, सोचा जहां से इतना मस्त शहद निकलता है वहां का शरबत भी मादक होगा ही. इसलिये उसका मूत पी कर देखने की मुझे बहुत इच्छा थी.

वह पहले तैयार नहीं हो रही थी, कह रही थी कि ये तो पाप होगा. पर इस कल्पना से कि वह अपनी मालकिन के बेटे, अपने छोटे मालिक को अपना मूत पिलाये, वह कितनी उत्तेजित थी यह मुझे तब पता चला जब आखिर मेरे खूब गिड़गिड़ाने और मिन्नत करने पर कि मां को नहीं बताऊंगा, वह आखिर मेरे मुंह में मूतने को तैयार हो गयी. साली की बुर इतनी चू रही थी कि जांघों पर रस बह कर टपक रहा था. पहले तो मुझे लगा कि उसने शायद पिशाब

कर दी हो पर फिर पता चला कि वह उसकी चूत का पानी था.

साली को मेरे खुले मुंह को अपनी बुर से चिपका कर उसमें मूतने में बहुत मजा आया, ऐसी गरम हो गयी थी कि मूतना खतम होते ही मेरे मुंह पर सवार होकर मुठ्ठु मारने लगी. मुझे भी मंजू बाई के मूत का स्वाद उत्तेजक लगा, मां के मूत से अलग था, ज्यादा खारा सा था पर मजेदार था.

बाद में मैं यह कई बार करने लगा. मां को नहीं बताया कि वह नाराज न हो जाये. मंजू तो फ़िदा हो गयी थी मुझपर, जब भी मैं कहता हाजिर हो जाती. उसने भी यह बात रघू से छुपा कर रखी. मेरे मुंह में मूतना उसके लिये इतना मस्त काम था कि वह यह उसे पूरा गुप्त रखना चाहती थी.

हमारी चुदाई अब सधे ढंग से चलने लगी थी, जैसे आम बात हो. हमारी टाइम टेबल जैसा भी बन गया था. अक्सर हम तरह तरह के खेल खेलते. कभी कभी सिर्फ़ गांड मराई होती. रात भर हमारी रंडी माएं एक दूसरी की बुर चूसतीं और हम दोनों बेटे उनपर चढ़कर उनकी गांड मारते. कभी कभी 'एक एक पर तीन तीन' खेल होता. इसमें किसी एक को निशाना बनाकर बाकी तीनों उसपर चढ़ जाते और तीनों ओर से याने चूत या लंड, गांड और मुंह में से एक साथ चोदते. मां या मंजू पर चढ़ते समय मैं और रघू आगे पीछे से दोनों छेदों से उन्हें एक साथ चोदते और मुंह में बची हुई औरत की चूत होती. मैं या रघू जब निशाना बनते तो गांड में लंड होता और मुंह और लंड पर मां या मंजू बाई होती.

हम लोगों के इस मस्त जीवन में अगला मोड़ करीब एक साल बाद आया. और वह भी ऐसा मोड़ जिसके अतिशय विकृत पर मादक आनंद की मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी.

--- समाप्त ---